दिनांक 30-01-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

सेकेण्ड में व्यक्त से अव्यक्त होने की स्पीड सर्व शक्तिवान् शिव बाबा बोले

एक संकल्प एक लगन में हर बच्चा नजर आया
बाप से मिलन मनाने का बच्चों ने स्वप्न सजाया

दृढ़ संकल्प के बल से जब बच्चे बाप को बुलाते
क्यों ना बच्चे अपनी कमी कमजोरी को मिटाते

अव्यक्त बाप को व्यक्त में लाना किया आसान
व्यक्त से खुद को अव्यक्त में लाना करो आसान

ज्ञान योग के दो पंख अब खुद को तुम लगाओ
साकार से निराकार लोक में तुरन्त पहुंच जाओ

एक सेकंड की गति का अपना पुरुषार्थ बनाओ
अपनी और समय की रफ्तार एक समान बनाओ

शस्त्र समान सर्व शक्तियाँ अपने अन्दर जगाओ
समय प्रमाण कर्तव्य हेतु काम में इनको लाओ

प्रकृति को दासी बनाकर उदासी को दूर भगाओ
बापदादा के दिलतख्त को लगन लगाकर पाओ

अपने मन बुद्धि से बाप के नजदीक आते जाओ
हर श्वांस संकल्प में बाबा की धुन में खोते जाओ

लगन की अग्नि में अब इतनी प्रचण्डता लाओ
स्वयं के पिछले संस्कारों को भस्म करते जाओ

संगमयुग की विशेषता को सत्य कर दिखलाओ
दृढ संकल्प द्वारा असम्भव को सम्भव बनाओ